क्रांतिकारी उदमीराम और उसकी पत्नी को अंग्रेजों ने पेड़ में कीलें ठोककर 35 दिन तक दी थी यातनाएं

जागरण संवाददाता, रोहतक : 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सोनीपत जिले के गांव लिबासपुर के क्रांतिकारी उदमीराम के योगदान को कोई कैसे भूल सकता है। उदमीराम की रग-रग में देशभक्ति भरी हुई थी। अंग्रेजों ने उदमीराम और उनकी पत्नी को पीपल के पेड़ में कीलों से ठोंक कर 35 दिन तक यातनाएं दी थी, जिसे सुनकर दिल सिहर उठता है। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में बुधवार को पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी उदमीराम पर आधारित नाटक का मंचन किया गया। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व सहकारिता राज्य मंत्री मनीष ग्रोवर ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। संयोजक की भूमिका दिनेश सिंह ने की। प्राचार्य मेजर दिनेश सहारन ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। नाटक के लेखक और निर्देशक कृष्ण नाटक ने साथी कलाकारों के साथ मंचन क्रांतिकारी उदमीराम के जीवन को जीवट कर दिया।

सहकारिता राज्य मंत्री मनीष ग्रोवर ने अपने उद्बोधन में कहा की अमर शहीदों को याद करना हर एक भारतवासी का कर्तव्य है। यह उनके बलिदान का ही परिणाम है कि हम आजादी के माहौल में जीवन जी रहे हैं। कार्यक्रम का मंच संचालन डा एकता शर्मा ने किया।

रोहतक के पंडित नेकीराम कालेज में क्रांतिकारी उदमीराम नाटक का मंचन करते कलाकार । ● जागरण

सोनीपत के लिबासपुर गांव के नंबरदार थे महान क्रांतिकारी उदमीराम

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सोनीपत जिले के गांव लिबासपुर के महान क्रांतिकारी उदमी राम के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। बताते हैं कि उदमी राम गांव के नम्बरदार थे। उदमी राम को उनकी पत्नी सहित अंग्रेजों ने यातनाएं दी थी। इतना ही नहीं सहयोगी मित्रों को बहालगढ़ चौक पर सरेआम सड़क पर लिटाकर पत्थर के कोल्हू के नीचे बुरी तरह रौंद दिया था। उदमी राम के परिवार ही नहीं बल्कि पूरे गांव को भयंकर सजा मिली और आज भी उस सजा को याद कर पूरा गांव सिहर उठता है। लेकिन उनकी देशभक्ति की आज युवाओं को मिसाल दी जाती है, जिसे सुनकर लोगों को अपने गांव व क्रांतिकारी उदमीराम पर गर्व होता है।

रोहतक के पंडित नेकीराम कालेज में क्रांतिकारी उदमीराम नाटक का मंचन करते कलाकार । ● जागरण